Summary

शोध प्रबंध के सभी अध्यायों का संक्षिप्त परिचय

तुलसी के मानस में निहित भक्ति एवं दर्शन इस शोध प्रबंध का प्रमुख विषय शीर्षक से ही अभिव्यक्त होता है । वैसे तो मानस में भक्ति और दर्शन के अतिरिक्त इतिहास, नीति, ज्योतिष, काव्यमीमांसा आदि विषय सामग्री प्रचुर मात्रा में मिलती है, परंतु यह सारी बातें भक्ति और दर्शन की भूमि पर खड़ी है । तुलसी की विचारधारा में दर्शन प्रमुख है और हृदय में भक्ति । इस शोध-प्रबंध में मानस के दर्शन-भक्ति को केन्द्र में रखते हुए और मानस की बातों को अन्य शास्त्रों, पुराणों और आचार्यों के विचार और संदर्भ से पुष्ट करते हुए पूरे विषय को उपसंहार सहित छः अध्यायों में बाँटा गया है ।

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय में भक्ति विषयक सैद्धांतिक चर्चा की गई है अर्थात् इस चर्चा में भक्ति की व्याख्या और स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । बाद में विविध विद्वानों के मत से अर्थात् शांडिल्य, पराशर, नारद, वल्लभाचार्य आदि के अनुसार भक्ति की विविध परिभाषाएँ दी गई हैं । और बाद में भक्ति के लक्षण, प्रकार और रहस्य को शास्त्रोक्त रूप से प्रकट किया गया है ।

उपरोक्त सैद्धांतिक चर्चा के बाद भक्ति की उत्पत्ति के पक्ष-विपक्ष में विविध विद्वानों के मत-मतांतर प्रकट किये हैं और बाद में वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, गीता, नारदभक्ति सूत्र, शाण्डिल्य भक्तिसूत्र और हिन्दी साहित्य में जो भक्ति चित्रित की गई है उसका विस्तृत वर्णन है ।

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय का "दर्शन एक विश्लेषण और मूल्यांकन" शीर्षक दिया गया है और इसके अंतर्गत भूमिका के रूप में सर्वप्रथम दर्शन पर एक दृष्टि डालने के बाद शास्त्रीय रूप से दर्शन की व्याख्या और अर्थ दिया गया है।

बाद में दर्शन की उपयोगिता को स्पष्ट करके दर्शन का भेद बताकर पाठकको भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों के नामों से अवगत कराने का प्रयत्न है । इस प्रकार इन दोनों दर्शनों के नामोल्लेख के बाद भारतीय दर्शन की नींव पर दर्शन विषयक विश्लेषण और मूल्यांकन का प्रकरण आगे बढता है और श्रौतदर्शन पर प्रकाश डाला गया है, श्रौत दर्शन के ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद विभाग की भी स्पष्टता है और बाद में श्रौतदर्शनके मुख्य विचार और चरमलक्ष्य का उल्लेख करके ज्ञान, ज्ञान शब्द की व्युत्पत्ति, ज्ञान के विविध अर्थ (गीता के आधार पर), ज्ञान के प्रकार, ज्ञान का स्वरुप, बौधिक ज्ञान, सापेक्ष और निरपेक्ष ज्ञान आदि ज्ञान विषयक चर्चा की गई है ।

बाद में सत्य और असत्य के अर्थ, परिभाषा ज्ञान के साधन, उदय, विविध दर्शनों के अनुसार ज्ञान भारतीय चिंतनानुसार ज्ञान का महत्व, रहस्यवाद का अर्थ और स्वरुप, विविध परिभाषा, वेद और उपनिषद में रहस्यवाद, रहस्यवाद की लाक्षणिकताएँ, प्रेम और रहस्यवाद, रहस्यवाद का वर्गीकरण, निर्गुण परम्परा, सगुण परंपरा और इन परंपराओं के दार्शनिक संत तथा भारत के अतिरिक्त रहस्यवाद आदि मुद्दों पर चर्चा की गई है ।

इसके बाद रहस्यवाद के भेदोपभेद, आत्मा और आत्मा का स्वरुप, अहंकार के प्रकार, अहंकार की उत्पत्ति कैसे ? ज्ञान प्राप्ति में अहंकार की बाधकता पारमार्थिक अहंकार, अहं और आत्मा, मनसंबंधी विचार, मनोनिग्रह के साधन, मन और हृदय, जन्म-मृत्यु संबंधी विचार, मुक्ति कैसे? विविध दर्शनों के आधार पर जगत्, माया की व्याख्या और स्वरुप, प्रकार, माया की सर्वव्यापकता, माया के कारण ही द्वैताद्वैत भाव, ईश्वरसंबंधी चिंतन, विश्वसृष्टा, जीव-माया और ईश्वर, पालक पोषक और नाशक केवल ईश्वर, साधना तथा ज्ञान, कर्म और भक्तियोग विषयक चर्चा करने का प्रयत्न किया गया है ।

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय के प्रारंभ में तुलसी साहित्य में जहां भक्ति संबंधित विचार मिलते हैं उसको स्पष्ट किया गया है । जिनमें दोहावली विनयपत्रिका, कवितावली

और गीतावली प्रमुख है ।

तीसरे अध्याय का शीर्षक दिया गया है -

तुलसी साहित्य में भक्ति और दर्शन

(क) तुलसी साहित्य में भक्ति

इस अध्याय के प्रारंभ में तुलसी साहित्य में जहां भक्ति संबंधित विचार मिलते हैं उसको स्पष्ट किया गया हैं । जिनमें दोहावली विनयपत्रिका, कवितावली और गीतावली प्रमुख है ।

दोहावली

ग्रंथ परिचय के बाद तुलसी के मानस और लेखनी पर जो युगप्रभाव रहा है उसका वर्णन है बाद में दोहावली में नामजपमहिमा, करुणामय श्रीराम का स्वभाव, भक्त की अभिलाषा कल्याण का सुगम उपाय, रामप्राप्ति का सुगम उपाय, शरणागति की महिमा और भक्ति का सुगम स्वरुप, श्रीरामकृपा क्या है? भजन की महिमा तथा प्रार्थना और विनम्रता के भावों को जो तुलसी ने प्रकट किये हैं उन सारी बातों पर यहां संक्षेप में प्रकाश डाला गया है ।

विनयपत्रिका

यहां भी ग्रंथपरिचय के बाद विनयपत्रिका का अर्थ देते हुए अवतार वंदना शैव-वैष्णव समन्वय भक्ति, मानसी पूजा, स्मार्तभाव, षोडशोपचार पूजा और प्रपत्ति आदि का उदाहरण के साथ रखने का प्रयत्न किया है ।

कवितावली

ग्रंथ परिचय के बाद तुलसी के द्वारा भक्ति को जो दुःखनिवृत्ति का अमोघ साधन बताया इसकी चर्चा की गई है और नामस्मरण, चातकभाव प्रपत्ति सिद्धांत और भक्ति में विनय की सात भूमिकाएँ आदि के विषय में तुलसी के भक्त हृदय के भावों को प्रकट करने का नम्र प्रयास रहा है ।

गीतावली में भक्ति

यहां ग्रंथ परिचय के बाद भक्तिमार्ग में निष्ठातत्व पर जो तुलसीने ज़ोर दिया है उस बात पर संक्षिप्त विवरण है ।

(ख) तुलसी साहित्य में दर्शन

दोहावली

यहां दोहावली के ब्रह्मराम, ईश्वर महिमा, जीव और उसकी दशाएँ, सृष्टि तथा माया की खोज, माया की दुर्ज्ञेयता प्रबलता और इससे मुक्त होने के उपाय तथा ज्ञान एवं ज्ञान की कठिनता आदि विषयों को लेकर तुलसी ने दर्शन का दर्शन कराने का प्रयास किया है ।

विनयपत्रिका

विनयपत्रिका का राम ब्रह्मराम, सच्चिदानंद स्वरूप है, वह सच्चिदानंद स्वरुप कैसा है ? राम की माया, जीव, और जगत की विडंबना तथा उसके मुक्ति के लिये मोक्षसाधन क्या है आदि विचारों को स्पष्ट किये गये हैं ।

कवितावली

कवितावली में तुलसी ने निर्गुण की अपेक्षा सगुण को अधिक स्वीकारा, राम को सर्वशक्तिमान माना, इस सर्वशक्तिमान ब्रह्म के अवतार क्यों होते हैं? उपरांत जीव और जगत के दुःखों से निवृत्ति के लिये क्या साधन है आदि बातों पर विचार किया गया है ।

गीतावली

गीतावली में तुलसीने जो ब्रह्मराम के सगुण स्वरूप का ही गान किया है और ब्रह्म जीव तथा माया की बात की है उसका संक्षिप्त वर्णन है ।

चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय को शीर्षक दिया गया है –

<u>रामचरित मानस में भक्ति</u>

इस अध्याय में शिव राम की समन्वय भक्ति, भक्ति के अवलंबन श्रीराम तथा मुक्ति के प्रकार को स्पष्ट करने के बाद नवधा भक्ति, आदि का वर्णन है और फिर श्रीराम का उदार स्वभाव और भागवत के मतानुसार नवधा भक्ति का वर्णन करके वत्सलभक्ति रस, शांतभक्ति रस और प्रेयानभक्ति रस का उल्लेख किया गया है ।

इस अध्याय के अंत में मैंने भक्ति के महाप्रभाव में पारिवारिक भक्ति भाव को भी जोड़ने का प्रयत्न किया है और मातृभक्ति, पितृभक्ति, पतिभक्ति, भ्रातृभक्ति, स्वामीभक्ति अथवा राजभक्ति आदि का सोदाहरण स्पष्टीकरण किया है जो मानस के सामाजिक पहेलू का प्राण है । और अंत में पशु-पक्षी और जड़तत्वों के हृदय में भी तो भगवान के प्रति भक्ति प्रकट हुई है उसके उल्लेख के साथ अध्याय पूर्ण होता है ।

पंचम अध्याय

इस अध्याय का शीर्षक दिया गया है –

<u>रामचरित मानस में दर्शन</u>

इस अध्याय के आरंभ में दर्शन विषयक भूमिका बांधकर फिर तुलसी के दर्शन अनुसार श्रीराम सच्चिदानंद स्वरूप, सगुण निर्गुण में कोई भेद नहीं, श्रीराम माया का आश्रय करके सगुण लीलाएँ करते हैं । सगुण को समझना गूढ़ और अज्ञान के कारण सगुण में मोह हो जानेकी संभावना आदि बातों का विस्तार से वर्णन किया गया है ।

यहां भक्त हृदय तुलसी ने मानस में यत्र-तत्र-सर्वत्र भक्ति का महिमागान किया है उसे सिद्ध करके उनकी भक्तिविषयक श्रद्धा को प्रकट करने का प्रयत्न है । बाद में पूरे अध्याय में भक्ति ही केन्द्र में और अनेक विषयों को वह अपने साथ लेकर चलती है और समाधान भी देती है जैसे कि भक्ति द्वारा अविद्या से मुक्ति मिलती है प्रेमाभक्ति क्या है ? हरिभक्ति का परिणाम क्या है ? माया से मुक्ति कैसे? परमार्थ स्वरुप क्या है ? भक्ति का स्वरुप क्या है ? सब साधनों का फल क्या है ? भक्ति और मुक्तिमें श्रेष्ठ क्या? आदि प्रश्नों का जवाब है केवल भक्ति-भक्ति और भक्ति !

बाद में मानस के आधार पर ही आगे सिद्ध किया गया है कि रामभक्ति विज्ञान से भी दुर्लभ है, भक्त प्रभु का परमप्रिय पात्र है, ज्ञान और भक्ति में भक्ति श्रेष्ठ है, ज्ञान दीपक के समान है तो भक्ति का मूल्य मणितुल्य है । भक्ति के बिना न तो मानस में मुक्ति हो सकती है न भक्ति जागती है, रामकृपा से दुर्लभ बातें भी सुलभ और सरल हो जाती है, दुर्गुणों का शमन हो जाता है और ऐसी रामकृपा भक्ति से ही प्राप्त होती है, जो प्रेमपूर्वक रामभजन करता है ऐसे भक्त के रक्षक स्वयं राम है । राम गर्वगंजन भी हैं और शरणागत के रक्षक भी ! वे भक्ति का नाश कभी भी नहीं होने देते हैं ।

उपरोक्त सभी विचारों के बाद इस अध्याय में भक्ति के साधन, रामकथा का प्रभाव, रामभक्ति की चौदह भूमिकाएँ, भक्ति के प्रादुर्भाव के लिए तुलसी के बताये हुए कर्ममूलक, ज्ञानमूलक और भक्तिमूलक मार्म का उल्लेख आदि विस्तार से संदर्भों के साथ स्पष्ट किया गया ।

इस अध्याय में यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न है कि श्रीराम विष्णु अवतार ही नहीं परंतु विष्णु से भी श्रेष्ठ और सामर्थ्यवान है, परमात्मा के साथ साथ अंशावतार भी प्रकट होते हैं, भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण आदि अंशावतार है ।

वानरादि में देवत्व है और सीता स्वयं प्रकृति, शक्ति और योगमाया स्वरुपा है । अखिल ब्रह्मांड मायावश है और माया ब्रह्म के बल के कारण क्रियाशील है । ब्रह्म के बल के कारण माया सत्य भासती है । माया पर राम का अआधिपत्य है और मायाजनित जगत वृथा है तथा राम सत्य है जगत स्वप्नवत हैं परंतु

अज्ञानवश जीव मोहरात्रि में सोया है, ब्रह्म विष्णु महेश जैसे भी जीव की कोटि में है फिर भी जीव ईश्वर का ही अंश है परंतु कर्मानुसार इसकी गति होती है तथा ब्रह्मज्ञान से जीव का आवागमन मिट जाता है तथा भेदभ्रम दूर हो जाते हैं, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति से जीव ब्रह्म रुप बन जाता है और यही परमार्थ है - मनुष्य देह सभी योनियों में श्रेष्ठ है, दुर्लभ है, बड़भाग से प्राप्त होता है तथा परमार्थ के लिये श्रेष्ठ साधन है ।

इस प्रकार इस अध्याय में जीव से लेकर ईश्वरतक की कक्षा पाने के लिये जितनी भी दार्शनिक बात है इन सारी बातों को मानस के आधार पर स्पष्ट करने का विनम्र प्रयास रहा है ।

षष्ठम अध्याय

उपसंहार में भक्ति और दर्शन को मिलाते हुए मेरे विचारों को मुक्त रुप से प्रकट करने का प्रयत्न है ।

अबोध शिशु जब संसारमें आता है तब उसका सबसे पहला परिचय पयोस्थलसे होता है - मां को तो वह बादमें पहचानता है, और उसी पयसे ही बच्चेकी आत्मासे लेकर कलेवर तक पुष्ट होते है, ठीक उसी प्रकार मेरे शैशवकालमें साहित्यसंसार में मेरा सर्वप्रथम परिचय श्री राम चरित मानस से हुआ । एकदृष्टि से रामकथा मेरी जननी बन गई और धीरे धीरे उसी मानस के पियूष से अर्थात् भक्ति-दर्शनकी भूमि पर ही मुझे इतिहास, पुराण, वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, मानसशास्त्र, आदिका गहनतम अभ्यास करने की प्रेरणा मिली । इस प्रकार रामायणमैयाने ही मुझे पियूषपान कराके मेरे खून के एक एक कतरे से लेकर आत्मा तक को राम के रंगमें रंग दिया ।

जंगलों की कुटियाँ से लेकर अयोध्या के नित्यपाठी और नवान्हपाठी संतो के साथ मेरे परम पूज्य पिताजीका लगभग नित्य सत्संग और परिचयमें आना, मेरी ममतामयी पू. माँ विमलादेवी का भी अनन्य मानसप्रेमी होना, संतोका, कवियोंका

और विद्वानों का घरमें आवागमन रहना, भरद्वाजगोत्रके संस्कारों को अस्तित्व की ओर से ही पाना, धर्म और अध्यात्म पारिवारिक विरासत के रुप में मिलना और "शुचिनां श्रीमतां गेहे.....।" – गीता के इस महावाक्य के अनुसार स्वयं की रुचि बाल्यावस्था से ही सत्संग और सद्अभ्यास तथा ध्यानादिमें होना – इन सारी बातों का सुचारु रुप से मेरे कोरेकागज़ जैसे सुकोमल मानस पर समुचित प्रभाव पड़ा । प्राथमिक शिक्षण के साथ साथ ही आध्यात्मिक शिक्षामें भी मेरी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती रही । न्यु एस.एस.सी. के बाद सिर्फ १४ सालकी उम्रसे गृहत्याग किया और १६ सालकी उम्रमें सन्यास लिया । सन्यास के लिये मेरा दर्शन ही मेरा गुरु था । तबसे लेकर आज तक न मैं किसीकी शिष्या रही हूँ ना कोई मेरा गुरु ।

मानस के प्रभाव से और धार्मिक आध्यात्मिक वातावरण से पारिवारिक जीवन और शिक्षा बहुत छोटी उम्रमें छूट गई परंतु मेरी अन्वेषीवृत्ति सिर्फ माध्यमिक शिक्षा तक के अभ्याससे तुष्ट नहीं थी । १४ सालकी उम्रमें गीता, रामायण आदि विषय पर गांवसे शहरों तकमें धर्मप्रेमियों द्वारा मेरे प्रवचन का आयोजन होता रहता था और उस वक्त धार्मिकता के नाम पर समाज में कई खोखली मान्यताएँ और अंधश्रद्धा फैली थी । लोग मानते थे कि स्त्री धर्ममंच पर विराजने की अधिकारिणी नहीं है । स्त्री हनुमान चालीसाका पाठ नहीं कर सकती है जहां रामकथा होती है वहां हनुमानजीकी उपस्थिति होती है इस लिये स्त्री को व्यास पीठ पर बैठने का अधिकार नहीं है, अगर ऐसा हुआ तो हनुमानजी प्रकुपित होते हैं आदि –

एक जागृत और क्रांतिकारी सन्यासिनी के रुपमें इतनी बड़ी धर्मांधता मैं कैसे सहन कर सकती ? पुरुषप्रधान राष्ट्रकी और पुरुषरचित ग्रंथों की इन सारी मान्यताओं और भ्रमणांओंको तोड़ना मेरा कर्तव्य और युगधर्म बन गया। यह सारी बाते मेरे लिये चुनौती बन गई और मैंने लोकजागृति के लिये रामायणकी महिला प्रवक्ताके रुप में स्वयं को घोषित करने का बीड़ा उठाया तथा मानस के पुरुषवक्ताओंकी दुनियाँ में मानस की महिला प्रवक्ताके रुपमें पदार्पण किया। और आज लगातार १५ वर्ष, के संघर्ष और पुरुषार्थ के बाद मैं उन धार्मिक,

सामाजिक भ्रमोंको तोड़ने में सफल रही हूँ और इस सफलता की नींव में मानस और भागवत जैसे गौरवग्रंथ रहे हैं जिसका मुझे आनंद और संतोष है ।

तुलसीपीठ पर से मानसको आधार बनाकर लोक जागरणका कार्य करते मानसके प्रति प्रेम-भक्ति बढ़ते गये । मानसकी गहराइयों को पूर्ण रूप से छूने के लिये मैंने पुनः शिक्षा को ही माध्यम बनाया और हिन्दी विषय के साथ स्नातक और अनुस्नातक तककी शिक्षा प्राप्त करके मेरा पूर्ण ध्यान Ph.D. की ओर केन्द्रित किया ।

ज्ञानयज्ञों और प्रवचनों के लिये मुझे गुजरातके अतिरिक्त यू.पी., एम.पी., महाराष्ट्र, बिहार आदि हिन्दी भाषा-भाषी इलाकोमें हिन्दी में ही प्रवचन देनेका अभ्यास था । मेरा क्षेत्र धार्मिक-आध्यात्मिक और समाजसेवा का होने के कारण दर्शन और भक्ति मेरे प्राणों के समान मूल्यवान विषय थे । १५ साल से आध्यात्मिक वक्ताकी भूमिका अदा करने के कारण प्रायः भक्ति और दर्शन के कोई भी ग्रंथ मुझसे अछूता नहीं रहा था । स्वाभाविक है कि मनुष्य अपने रुचिपूर्ण विषय को ही पसंद करता है - और मैंने भी 'मानसमें निहित भक्ति एवं दर्शन का अनुशीलन'-विषय उठाकर शोध-प्रबंध में कुछ अनुभवके आधार पर और कुछ मौलिकताके साथ तथा अन्य अनेक आदरणिय विद्वानों के ग्रंथों में से कुछ संदर्भ के रुप में लेकर साहित्य जगतके चरणो में कुछ नया देनेका नम्र प्रयत्न किया है ।

१. वैसे तो विभिन्न विद्वानोंने मानस पर प्रचुरमात्रामें काम किया है, परंतु मेरे बोध के अनुसार कुछ विद्वानोंने तुलसी साहित्य में से सिर्फ भक्ति को उठाया है तो कुछ विद्वानोंने सिर्फ दर्शन को परंतु मैंने इस शोध प्रबंधमें भक्ति-दर्शनका समन्वय करनेका प्रयत्न किया है । जो मानसमें निहिततत्वोंका ही अनुशीलन है ।
२. भक्ति और दर्शन के विभिन्न विद्वानोने दर्शन और भक्ति को भिन्न भिन्न शिखरों पर पाया है परंतु तुलसी-जिन जिन बिंदुओं पर दोनों का एक दूसरेमें विलीन पाया है उन बातों को मैंने इस शोध प्रबंध में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है ।

३. वेदों को श्रौतदर्शन कहा गया है और प्रमुख रूप से वह ज्ञानपूर्ण है। परंतु उन श्रौतदर्शनमें से भी भक्तितत्वको चुन चुनकर मैंने इस शोध प्रबंध में रखने का प्रयत्न किया है ।

४. उपसंहारमें भक्ति-दर्शन दोनोंको परस्परके पूरक सिद्ध करनेका प्रयत्न रहा है । और यंत्रवत् जीनेवाले वर्तमान मनुष्यों के जीवन के लिये भक्ति-दर्शन को नवजिवन प्रधान करनेवाले सिद्ध किये हैं ।

५. शोध प्रबंध के केन्द्रमें 'मानस' होने पर भी तुलसी साहित्यके अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथोंमें से भी भक्ति एवं दर्शनयुक्त तत्वको स्पष्ट करके विषयकी पुष्ट करनेका नम्र प्रयास रहा है ।

६. मानसमें भक्ति और दर्शन दोनों तत्वका समानरुप से निर्वाह हुआ है और मानस केवल भक्ति भावका ग्रंथ नहीं है - इस बातको सिद्ध करने का विनम्र प्रयत्न है ।

७. शास्त्रोंकी और पौराणिक भक्ति के उपरांत पितृभक्ति, पतिभक्ति, भ्रातृभक्ति, आदि लौकिक धरातल पर पारिवारिक रुप से पनपती भक्तिको भी भक्ति में ही स्थान देकर एक बिल्कुल नई बात प्रकाशित अथवा स्थापित करने का प्रयत्न है ।

८. अयोध्यावासियों की राजभक्ति पर प्रकाश डालकर भक्ति का एक नूतन पहलू प्रकट करनेका प्रयत्न है । जिससे लोकमंगल और समाजकल्याण का हेतु सिद्ध होता है ।

९. निजअनुभूतियोंके अर्करूप दर्श-भक्ति विषयक चिंतन-मनन को यथास्थान जोड़ने का प्रयत्न किया है ।

कविह्रदय से सृजन किया नहीं जाता, हो जाता है । मैंने भी साहित्यजगत् को कुछ अर्पण करनेका प्रयत्न किया है मेरा स्वयं का साहित्य सृजन निम्नोक्त है -

गद्यविधा

१. हनुमान चालीसा एक अभिनव दर्शन - सरल शब्दार्थ और पद्यानुवाद तथा क्रांतिकारी विवरण के साथ

इस पुस्तक में मैंने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि हनुमान जी न केवल वानरों के प्रतिनिधि है न भूत भगाने का साधन । मैंने पवनपुत्रको एक नई दृष्टि से धर्मांध समाजके सामने रखनेका प्रयत्न किया है और इस प्रकार हनुमानचालिसा का पुनर्मूल्यांकन करने की चेष्टा की गई है। - (गुजराती)

२. गुरुपूर्णिमा और धार्मिक लूंट (गुजराती) :-

धर्म के नाम पर चल रही परंपरा तथा धार्मिक शोषण और दमन विरोधी एक क्रांतिकारी पुस्तक ।

३. भक्ति योग - एक विवेचन - (गुजराती) :-

गीता के बारहवें अध्याय पर भक्तोंके लक्षणोंका विशद वर्णन ।

पद्यविधा

१. 'मोहिनीसुधा' (हिन्दी में) :-

'मोहिनी' मेरा उपनाम है और पिंगल साहित्य रुपमें अर्थात भुजंगी, घनाक्षरी, सवैया, छप्पय आदि रचनाएँ इसी नाम से की गई हैं और इसमें शिव राम और कृष्ण केन्द्र में है ।

२. 'स्पर्श' (गुजराती गज़ल संग्रह) :-

३. 'जर्रे जर्रे से प्यार' (हिन्दी) (एक सूफ़ीवादी नज़म)

४. 'विठ्ठल स्मरणिका' - (गुजराती स्वरचित १०८ सोरठों का समूह) (भक्ति साहित्य)

इस शोध प्रबंध के पीछे मेरा मानस प्रेम, भक्त हृदय, सन्यस्थ जीवन, दार्शनिक विचारधारा, अभ्यास में रुचि आदि तो कारणभूत है हि परंतु कुछ और भी महान आत्माओं का इस भगीरथ कार्यके पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से सहयोग रहा है ।

- सर्व प्रथम तो मेरे अध्यात्मिक बंधु, संस्कृत और हिन्दी के प्रकांड विद्वान और परम परोपकारी पवित्र आत्मा तथा इस शोध प्रबंध के मेरे मार्गदर्शक एम.एस.युनि., बड़ौदा के परम आदरणीय डॉ. हरिप्रसाद पाण्डेय के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने पूर्ण सहकार और स्नेह के साथ यह कार्य शुरु करवाया है और स्थान स्थान पर मुझे प्रोत्साहित करके मेरा हौसला बढ़ाया है ।
- बाद में मेरे जन्मदाता पूज्य वसंतराई डी. दवे के प्रति जितना आभार प्रदर्शित करुं उतना कम होगा क्योंकि सन्यास मार्ग के कारण मेरी पढ़ाई बचपन से ही छूट गई थी, इस बात का विश्वमें अगर किसीको सबसे ज्यादा रंज था तो वे थे वी.डी. दवे । आज शायद ७५ वर्ष की जराग्रस्त स्थितिमें उनका एक ही स्वप्न रहा है कि उनके जीते जी मैं Ph.D. का कार्य पूर्ण करुं । इस शोध प्रबंध के कार्यमें उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करने का एक भी मौका नहीं छोड़ा ।
- मा हरेश्वरी देवी संस्थान के विविधलक्षी सेवाकार्योंमें एक मेनेजिंग डायरेक्टर की भूमिका अदा करते हुए इस कार्य के लिये समय निकालना मेरे लिये कठिन था, परंतु संस्था के ट्रस्टीगण, मेनेजर और अन्य साधक शिष्योंने यथासंभव मेरा सहयोग किया है इसके लिए मैं उनकी भी ऋणी हूं ।
- अस्तित्व के असंख्य पवित्र आत्माओंकी पुकार से यह आध्यात्मिक कार्य संपन्न हुआ है, तो अस्तित्वको वंदन करना कैसे चूकूँ ?

॥ ॐ सर्वात्मने नमः ॥